विचार बिन्दु

जो काम घड़ों जल से नहीं होता उसे दवा के दो घूँट कर देते हैं और जो काम तलवार से नहीं होता वह काँटा कर देता है। –सुदर्शन

जल संरक्षण में स्मार्ट तकनीकें और नवाचार: स्थायी भविष्य की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम

जल संरक्षण आज की सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों में से एक है। जल केवल जीवन का आधार नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय संतुलन का भी मुख्य स्तंभ है। किंतु तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और पारंपरिक स्त्रोतों के अंधाधुंध उपयोग व प्रदूषण के कारण जल संकट गहराता जा रहा है। एक ओर कुछ क्षेत्रों में पानी की गंभीर कमी है, वहीं दूसरी ओर संसाधनों का असमान वितरण समस्या को और जटिल बना रहा है। ऐसे में इस संकट से निपटने के लिए केवल पारंपरिक उपायों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। आधुनिक समय में तकनीकी नवाचार और स्मार्ट तकनीकों का संयोजन ही जल संरक्षण की सबसे प्रभावी रणनीति बनकर उभर रहा है। भारत जैसे विकासशील देशों में जल संरक्षण की आवश्यकता और भी अधिक गंभीर है। देश की कृषि व्यवस्था आज भी जल पर ही आधारित है, जबकि औद्योगिक और शहरी विकास भी जल की खपत लगातार बढ़ा रहे हैं।

रिपोर्ट्स बताती हैं कि आने वाले वर्षों में भारत के कई शहर 'डे-ज़ीरो' की स्थिति तक पहुँच सकते हैं, यानी वह दिन जब नलों से पानी आना बंद हो जाएगा। यह चेतावनी इस बात की ओर इशारा करती है कि यदि जल उपयोग को वैज्ञानिक तरीके से नियंत्रित नहीं किया गया, तो आगामी पीढ़ियाँ गंभीर जल संकट का सामना करेंगी। तकनीकी नवाचारों ने मानव जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन किया है और जल प्रबंधन भी इससे अछूता नहीं है। नई तकनीकें जल उपयोग और आपूर्ति दोनों को वैज्ञानिक ढंग से नियंत्रित करने की क्षमता रखती हैं। इनमें स्मार्ट वाटर मीटर, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), डेटा एनालिटिक्स, स्मार्ट सिंचाई प्रणालियाँ, वर्षा जल संचयन और जल पुनर्चक्रण जैसी तकनीकें प्रमुख हैं। जल संरक्षण के क्षेत्र में सबसे बड़ा बदलाव स्मार्ट वाटर मीटर के रूप में देखा जा रहा है। यह उपकरण रीयल-टाइम डेटा प्रदान करता है, जिससे उपभोक्ता अपनी जल खपत पर नज़र रख सकते हैं। इससे पानी की बर्बादी कम होती है और आवश्यकता से अधिक खपत पर तुरंत नियंत्रण संभव हो पाता है। इसी प्रकार IoT आधारित सेंसर पानी की पाइपलाइनों और टैंकों में रिसाव का पता लगाते हैं। यदि कहीं लीकेज या ओवरफ्लो जैसी स्थिति होती है, तो ये सेंसर तुरंत संदेश भेजकर चेतावनी देते हैं। इस प्रकार बड़ी मात्रा में पानी की हानि को समय रहते रोका जा सकता है।

भारत की कृषि व्यवस्था जल संरक्षण की दिशा में तकनीकी नवाचारों का सबसे बड़ा केंद्र बन सकती है। स्मार्ट सिंचाई प्रणालियों का प्रयोग इसका स्पष्ट उदाहरण है। ड्रिप इरिगेशन और स्प्रिंकलर सिस्टम पौधों की जड़ों तक आवश्यक मात्रा में पानी पहुँचाते हैं। अब तो ये प्रणालियाँ मिट्टी की नमी, तापमान और मौसम की स्थिति जैसे आँकड़ों के आधार पर स्वतः सिंचाई करती हैं। इससे न केवल जल की भारी मात्रा में बचत होती है, बल्कि फसलों की पैदावार और गुणवत्ता दोनों पर सकारात्मक असर पड़ता है। किसान ऊर्जा और श्रम की लागत बचाकर अधिक उत्पादन व आय अर्जित कर सकते हैं। यह तकनीक 'कम पानी, अधिक उत्पादन' की अवधारणा को साकार करती है। वर्षा जल संचयन की संस्कृति भारत में प्राचीन समय से रही है, लेकिन आधुनिक तकनीक ने इसे और प्रभावी बना दिया है। आज स्मार्ट रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम उपलब्ध हैं, जो छत पर गिरे वर्षा जल को स्वतः फ़िल्टर करके टैंकों में संग्रहित करते हैं। इस पानी का उपयोग घरेलू कार्यों, बागवानी और यहाँ तक कि पीने योग्य स्तर पर शुद्ध करके किया जा सकता है। पुनर्चक्रण तकनीक भी जल संरक्षण का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गई है। घरेलू और औद्योगिक स्तर पर प्रयुक्त जल को उन्नत वैज्ञानिक तरीकों से शुद्ध कर पुनः उपयोग में लाया जा सकता है। इससे न केवल ताजा पानी की आवश्यकता घटती है, बल्कि नदियों और भूमिगत जल पर दबाव भी कम होता है।

वर्षा जल संचयन की संस्कृति भारत में प्राचीन समय से रही है, लेकिन आधुनिक तकनीक ने इसे और प्रभावी बना दिया है। आज स्मार्ट रेनवॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम उपलब्ध हैं, जो छत पर गिरे वर्षा जल को स्वतः फ़िल्टर करके टैंकों में संग्रहित करते हैं। इस पानी का उपयोग घरेलू कार्यों, बागवानी और यहाँ तक कि पीने योग्य स्तर पर शुद्ध करके किया जा सकता है। पुनर्चक्रण तकनीक भी जल संरक्षण का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गई है।

जल संरक्षण में एआई और बिग डेटा एनालिटिक्स की भूमिका बढ़ रही है। बड़ी मात्रा में एकत्रित जल उपयोग डेटा का विश्लेषण करके भविष्य में होने वाली मांग का अनुमान लगाया जा सकता है। इससे प्रशासन और नगर निकाय जल वितरण की बेहतर योजनाएँ बना सकते हैं। एआई आधारित तकनीकें रिसाव का पता लगाने, बर्बादी रोकने, और अलग-अलग क्षेत्रों में जल खपत की तुलना करके नीतिगत निर्णय लेने में सहायक हैं। भविष्य में इन तकनीकों का विकास जल संकट से निपटने में निर्णायक साबित होगा। शहरों में जल संकट सबसे गंभीर रूप धारण करता है। यहाँ स्मार्ट जल प्रबंधन प्रणालियों का प्रयोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सेंसर और क्लाउड बेस्ड प्लेटफार्म के ज़रिए जल वितरण और खपत का रीयल-टाइम नियंत्रण किया जाता है। भारत के कई स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स में इन तकनीकों का उपयोग करके जल खपत को नियंत्रित करने और रिसाव से होने वाली हानि को घटाने में सफलता भी मिली है। इससे शहरी जीवन स्तर सुधरता है और जल संकट का दबाव कम होता है।

जल संरक्षण के तकनीकी उपाय केवल पर्यावरणीय लाभ ही नहीं देते, बल्कि ये आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी हैं। घरेलू स्तर पर स्मार्ट मीटर और वर्षा जल संचयन से पानी का बिल घटता है। खेती में स्मार्ट सिंचाई से उत्पादन बढ़ता है और लागत घटती है। उद्योगों में जल पुनर्चक्रण से न केवल जल संरक्षण होता है, बल्कि लागत भी कम होती है। सामाजिक दृष्टि से ये तकनीकें जल-संकट से जुड़े झगड़े और संकटों को कम करती हैं। जिन क्षेत्रों में जल की कमी है, वहाँ स्मार्ट समाधान से जल उपलब्धता एक समान और न्यायपूर्ण ढंग से सुनिश्चित होती है। तकनीकी समाधान तभी सफल हो सकते हैं, जब लोग उनमें सक्रिय रूप से भाग लें। जल संरक्षण के प्रति जागरूकता अभियान चलाना और नागरिकों को स्मार्ट तकनीकों के फायदे समझाना सरकार और समाज दोनों की जिम्मेदारी है। यह मानना गलत होगा कि केवल सरकारी परियोजनाएँ ही जल संकट से निपट सकती हैं। हर नागरिक को अपनी जल खपत को नियंत्रित करने और नई तकनीकों को अपनाने की ज़िम्मेदारी उठानी होगी।

जल संरक्षण केवल नैतिक दायित्व नहीं, बल्कि यह हमारे अस्तित्व की मूलभूत आवश्यकता है। आधुनिक तकनीकों और नवाचारों ने इस क्षेत्र में नए अवसर पैदा किए हैं। स्मार्ट वाटर मीटर, IoT, एआई, वर्षा जल संचयन और जल पुनर्चक्रण जैसी तकनीकें यह साबित कर चुकी हैं कि वैज्ञानिक साधनों से जल संकट पर काबू पाया जा सकता है। भारत सहित पूरे विश्व के लिए यह एक प्रेरणादायक दिशा है कि तकनीक और परंपरा का संयोजन करके जल संरक्षण को स्थायी और दीर्घकालिक बनाया जा सकता है। यदि समय रहते इन समाधानों को बड़े पैमाने पर अपनाया गया, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और पर्याप्त जल उपलब्ध कराना संभव होगा। अंततः जल संरक्षण केवल सरकारों की योजनाओं का विषय नहीं है, यह समाज के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। वैज्ञानिक नवाचारों की मदद से जल संसाधनों का जिम्मेदाराना, कुशल और सतत उपयोग ही हमें एक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

समाजवाद के प्रणेता अहिंसावादी प्रथम वैश्य सम्राट महाराजा अग्रसेन

डॉ.जे.के. गर्ग

निर्विवाद रूप से किसी भी राष्ट्र या समाज एवं परिवार को उन्नत विकसित और कल्याणकारी बनाने के लिये उसके आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तम्भों का मजबूत होना अति आवश्यक है । इन चारों स्तंभों को दृढ करके ही राष्ट्र को प्रगतिशील एवं विकसित देश बनाया जा सकता है । लगभग 5146 वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेनजी इन्हीं चार स्तंभों को मजबूत कर समद्धर्शाली, कल्याणकारी समाजवादी एवं शक्तिशाली राज्य का निर्माण करने में सफल हुए थे । अठासेन एक पौराणिक कर्मयोगी लोकनायक होने के साथ साथ अहिंसा और समाजवाद के प्रणेता तपस्वी धर्म परायण दानवीर युग पुरुष थे जिनका जन्म द्वापर युग के अंत व कलयुग के प्रारंभ में लगभग 514,6 वर्ष पूर्व अश्विनशुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रताप नगर के सूर्यवंशी राजा वल्लभसेन के यहाँ हुआ था उनकी माताजी का नाम भगवतीदेवी था। प्रतापनगर राजस्थान एवं हरियाणा राज्य के बीच सरस्वती नदी के किनारे स्थित हुआ करता था ।

ऐसा भी कहा जाता है की महाराजा अग्रसेन भगवान श्रीराम के पुत्र कुश की 34वीं पीढ़ी के थे । इस मान्यता के मुताबिक अग्रवंशी भगवान राम के वंशस होते है । कहा जाता है कि महाभारत के दसवें दिन राजा वल्लभसेन वीर गति को प्राप्त हो गये थे । पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु मे ही अग्रसेनजी ने महाभारत के धर्मयुद्ध में पांडवो की तरफ से भाग लिया था। भगवान श्रीकृष्ण भी उनकी बुद्धिमता, शोर्य, पराक्रम, समझबुझ से अत्यंत प्रभावित हुए थे और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युवा अग्रसेन भविष्य में एक पराक्रमी सम्राट एवं युग पुरुष होंगे ।

विवाह-- युवा अग्रसेन ने सर्पों के राजा नागराज की बेटी राजकुमारी माधवी के स्वयंवर में अनेकों राजाओं, राजकुमारों और स्वर्ग के सम्राट इंद्रदेव के साथ भाग लिया था । इंद्र देवता राजकुमारी माधवी की सुंदरता पर मोहित थे इसीलिए एन केन प्रकारेण राजकुमारी माधवी से विवाह करना चाहते थे। स्वयंवर में राजकुमारी माधवी ने राजकुमार अग्रसेन का चयन कर उनका वरण किया । अग्रसेन माधवी के विवाह से दो विभिन्न संस्कृतियों एवं परिवारों का मिलन हुआ क्योंकि राजकुमार अग्रसेन जहाँ एक सूर्यवंशी थे वहीं राजकुमारी माधवी एक नागवंशी थी। राजकुमारी माधवी का विवाह अग्रसेन जी के साथ हो जाने से इंद्रदेव ने अपने आप को अपमानित महसूस किया और वे ईर्ष्या ग्रस्त होकर बहुत क्रोधित हुए और इन्द्र ने प्रताप नगर के निर्दोष स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं को प्रताड़ित करने हेतु प्रताप नगर पर कई वर्षों तक बारिश नहीं होने दी जिससे प्रताप नगर में भयानक अकाल पड गया । सम्राट अग्रसेन ने अपनी प्रजा एवं प्रताप नगर की सुरक्षा और राजधर्म के पालनार्थ इंद्र के खिलाफ धर्मयुद्ध प्रारम्भ कर दिया । युद्ध में इंद्र की पराजय हुई । पराजित इंद्र ने नारदमुनि से अनुनय-विनय कर उनकी सम्राट अग्रसेन से सुलह कराने का निवेदन किया । नारद मुनि ने दोनो के बीच में मध्यस्थता करके सुलह करवा दी ।

भगवान शिव और माता लक्ष्मी की आराधना

यहाँ यह स्मरण रखने वाली बात है कि महाभारत के युद्ध के कारण जन धन की बहुत तबाही हुई थी इसलिए अपने राज्य की खुशहाली के वास्ते महाराजा अग्रसेन ने काशी जाकर भगवान शिव की कठोर तपस्या की जिससे खुश हो कर भगवान शिवजी ने उन्हें दर्शन दिया और उनको आदेश दिया कि वे महालक्ष्मी जी की पूजा और ध्यान करे । अग्रसेन ने महालक्ष्मी की पूजा आराधना शुरू कर दी। माँ लक्ष्मी ने उनकी परोपकार हेतु की गई तपस्या से खुश होकर उन्हें दर्शन दिए और आदेश दिया कि वे अपना एक नया राज्य बनायें और क्षत्रिय परम्परा के स्थान पर वैश्य परम्परा अपना लें। माता लक्ष्मी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनके और उनके अनुयायियों को कभी भी किसी चीज की कमी नहीं होगी, वे सभी सदैव सुख-सुविधा युक्त जीवन व्यापन करगें। लक्ष्मी माता का आदेश मान कर अग्रसेन महाराज ने क्षित्रय कुल को त्याग वैश्य धर्म को अपना लिया, इस प्रकार महाराजा अग्रसेन प्रथम वैश्य सम्राट बने ।

अग्रोहा शहर का जन्म– देवी महालक्ष्मी से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद राजा अग्रसेन ने नए राज्य की स्थापना एवं उस राज्य की राजधानी के चयन हेतु रानी माधवी के साथ भारत का भ्रमण किया, अपनी यात्रा के दौरान वे एक जगह रुके जहाँ उन्होंने देखा कि कुछ शेर और भेड़िये के बच्चे साथ खेल रहे थे । राजा अग्रसेन ने रानी माधवी से कहा के ये बहुत ही शुभ दैवीय संकेत है है जो हमें इस पुण्य भूमि पर हमारे राज्य की राजधानी को स्थापित करने का इशारा कर रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नये राज्य का नाम अग्रोयगण रखा गया जिसे कालान्तर में यह स्थान अग्रोहा नाम से जाना गया। अग्रोहा हरियाणा में हिसार के पास हैं। आज भी यह स्थान अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ स्थान के समान है। यहां भगवान अग्रसेन, माता माधवी और कुलदेवी माँ लक्ष्मी जी के भव्य और दर्शनीय मंदिर है ।

समाजवाद के प्रेरणता– महाराजा अग्रसेन जी के राज्य में यह परंपरा थी कि जो भी व्यक्ति या परिवार उनके राज्य में आकर बसता था, अग्रोहा के सभी निवासी नवागंतुक नागरिक को सम्मान और स्वागत के रूप में एक रुपया और एक ईंट भेंट करते थे। कहा जाता है कि उस समय अग्रोहा में लगभग एक लाख से अधिक परिवार बसते थे। इस प्रकार उनके राज्य में आने वाला हर नागरिक एक लाख रुपये तथा एक लाख ईंटों का स्वामी बन जाता था। इन रुपयों से वह अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर लेता था वहीं ईंटों से अपना खुद का मकान बना लेता था। यही परंपरा समाजवाद की ही मिसाल है निसंदेह अग्रसेन जी ने विश्व में सबसे पहले समाजवादी राष्ट्र की स्थापना की थी।

पशु बलि बंद करने वाले प्रथम सम्राट कुलदेवी माता लक्ष्मी की कृपा से भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र हुये। राजकुमार विभु उनमें सबसे बड़े थे। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। उन दिनो यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी। जिस समय 18वें यज्ञ में जीवित पशुओं की बलि देने की तैयारी की जा रही थी उस वक्त एक घोडा बली के लिए लाया गया । महाराज अग्रसेन ने देखा कि घोड़े की निरीह आँखों से अविरल आंसू बह रहे थे और वो निरीह पशु यज्ञ की वेदी से दूर जाने और वहां से भागने की कोशिश कर रहा था । इस दृश्य को देख कर महाराज अग्रसेन का दिल दया से भर गया और वे आहत भी हुए । उन्होंने सोचा कि ये कैसा यज्ञ है जिसमें हम मूक जानवरों की बलि चढ़ाते है ? महाराजा अग्रसेन ने पशु वध को बंद करने के लिये अपने मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया और अपने मंत्रिमंडल के विचारों के विपरीत जाकर उन्हें समझाया कि अहिंसा कभी भी कमजोरी नहीं होती है बल्कि अहिंसा तो एक दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन जगाती है। महाराजा अग्रसेन ने तुरंत प्रभाव से मुनादी करवा दी की उनके राज्य मे कभी भी कोई हिंसा और जानवरों की हत्या नहीं होगी । अग्रसेन जी अहिंसा परमो धर्म का संदेश देने वाले प्रथम महाराजा बन अहिंसा का संदेश उन्होंने भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के अहिंसा के संदेश से 2500 साल पहले दे दिया था ।

शासन व्यवस्था– भगवान अग्रसेन ने एक तांत्रिक शासन प्रणाली के स्थान पर एक नयी प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था को जन्म दिया अग्रसेन जी ने वैदिक सनातन आर्य संस्कृति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य के पुनर्गठन में कृषि व्यापार उद्योग, गौ पालन के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा का बीड़ा उठाया। महाराजा अठासेन जी पहले शासक थे जिन्होंने सहकारिता के आदर्श को सामाजिक जीवन में प्रतिस्थापित किया। उन्होंने जीवन के सुख-सुविधाओं एवं भोग विलास आदि पर धन के अपव्यय के स्थान पर जीवन में सादगी, सरलता और मितव्ययिता बरतने पर जोर दिया। अग्रसेन के मतानुसार व्यक्ति को अपनी उपार्जित आय को चार भागों में बांट कर एक भाग का उपयोग परिवार के संचालन हेतु, दूसरे भाग का उपयोग उद्योग व्यवसाय या जीविका चलाने हेतु, तीसरे भाग का उपयोग सार्वजनिक कार्यों तथा चौथे भाग का उपयोग बचत कर राष्ट्र की समृद्धि में करना चाहिये।

अग्रवाल के 18 गोत्र एवं उनका नामकरण हममें से अधिकाक्षं लोगों की मान्यता है कि अग्रवालों के 18 या साढ़े सत्तराह गोत्रो के नाम उनके 18 पुत्रों के नाम से रक्खें गये है किन्तु वास्तविकता में गोत्रो के नाम 18 यज्ञ करवाने वाले ऋषियों के नाम से है । महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि इन 18 यज्ञों को ऋषि मुनियों ने सम्पन्न करवाया और इन्हीं ऋषि-मुनियों के नाम पर ही अग्रवंश के गोत्रों का नामकरण हुआ । प्रथम यज्ञ के पुरोहित स्वयं गर्ग ऋृषि बने, उन्होंने राजकुमार विभु को दीक्षित कर उन्हें गर्ग गोत्र से मंत्रित किया। इस प्रकार अग्रवालों के 18 गोत्र हैं यथा– गर्ग, तायल, कुच्चल, गोयन, भंदेल, मंगल, मित्तल, बंसल, बिंदल, कंसल, नागल, सिंघल, गोयल, तिंगल, जिंदल, धारण, मधुकुल, एरेन । ऋृषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को भगवान अग्रसेन के 18 पुत्रों के साथ भगवान द्वारा बसाई 18 बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाये रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी में प्रचलित है। राज्य के उन्हीं 18 गणों से एक-एक प्रतिनिधि लेकर उन्होंने लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना की, जिसका स्वरूप आज भी हमें भारतीय लोकतंत्र के रूप में दिखाई पडता है। महाराजा अग्रसेन ने परिश्रम से खेती, व्यापार एवं उद्योगों से धनोपार्जन के साथ-साथ उसका समान वितरण और आय से कम खर्च करने पर बल दिया। जहां एक ओर अग्रसेन जी ने वैश्य जाति को न्याय पूर्ण व्यवसाय का प्रतीक तराजू प्रदान किया वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपनी प्रजा को आत्मरक्षा के लिए शास्त्रों के उपयोग की शिक्षा भी प्रदान करवाई थी । कुलदेवी महालक्ष्मी से परामर्श पर वे आग्रेय गणराज्य का शासन अपने ज्येष्ठ पुत्र विभु के हाथों में सौंपकर तपस्या करने चले गए। वर्तमान में अग्रवंशियो की संख्या लगभग आठ करोड़ है ।

अग्रसेन जी के वंशज आज भी उन्हीं की विचारधारा से प्रभावित होकर जनकल्याण के हितार्थ धर्मशाला, मंदिर, अनाथालय, अस्पताल पुस्तकालय, स्कूल एवं कालेज की स्थापना करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं । सच्चाई तो यही है कि महाराजा अग्रसेन ने अपने विशाल परिवार को हमेशा एकता के सूत्र मे बांध कर एकजुट रक्खा । इसलिए सम्राट अग्रसेनजी ने अपने आपको एक महान एवं सफल मेनेजमेंट गुरु के रूप में स्थापित किया। महाराजा अग्रसेन ओर माता माधवी ने अपने सभी 18 पुत्रों को श्रेष्ठतम संस्कार प्रदान किये थे । महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का प्रवर्तक, अहिसां के पुजारी, सुयोग्य प्रशासक एवं आदर्श मेनेजमेंट गुरु के रूप में जाना जाता है आठ करोड़ से ज्यादा अग्रवालों के लिये उनके सिद्धांत हमेशा अनुकरणीय और प्रेरक बने रहेगें । याद करने योग्य बात यह भी है सम्राट अकबर के नवरत्नों में दो नवरत्न अग्रवाल थे। अठासेनजी के 5146वें जन्मदिवस पर कोटि-कोटि प्रणाम ।

–डा. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

विवाद से विश्वास तक, सेवा शिविर बना नई शुरुआत का मंच

70 साल पुराने भूमि विवाद का समाधान हुआ

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर राज्यभर में संचालित किए जा रहे ग्रामीण सेवा शिविर जोधपुर जिले की ग्राम पंचायत जसवंतपुरा के लिए एक ऐतिहासिक पल लेकर आया। लगभग 70 वर्षों से चले आ रहं खातेदारी भूमि विवाद का समाधान यहाँ आपसी सहमति से हो गया।

सात दशकों से लंबित विवाद पर लगी समाधान की मुहर–

गाँव के डूंगरराम, त्रिलोकराम, पपली देवी, भूराराम, निंबाराम, मेघाराम और शोभाराम की कुल

जोधपुर जिले की ग्राम पंचायत जसवंतपुरा में सात दशक के विवाद को शिविर में सुलझाया।

2.5161 हेक्टेयर भूमि वर्षों से विवादों में उलझी हुई थी। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चल रहे इस मामले में बंटवारा संभव नहीं हो पा रहा था। सेवा पखवाडे के अंतर्गत आयोजित प्री-कैंप में राजस्व अधिकारियों ने सभी खातेदारों को सहमति विभाजन हेतु समझाइश की। परिणामस्वरूप ग्रामीण सेवा शिविर के दिन सभी परिवारों ने एकमत होकर समझौते पर सहमति दी और बंटवारा संपन्न हुआ।

शांति और सौहार्द का प्रतीक बना शिविर: विवाद के समाधान पर खातेदारों ने भावुक होते हुए मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा और राज्य सरकार का आभार जताया। उन्होंने कहा कि यह पहल केवल ज़मीन का बंटवारा नहीं, बल्कि शांति, राहत और नई उम्मीद की शुरुआत है।

70 वर्षों बाद लौटी मुस्कान: गाँव के बुजुर्गों के अनुसार यह फैसला सिर्फ़ भूमि विवाद का हल नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सौहार्द और विश्वास की नींव है। जसवंतपुरा का यह ग्रामीण सेवा शिविर सचमुच विवाद से विश्वास की अनूठी यात्रा का साक्षी बना।

–आकांक्षा/सोनू शर्मा

धूमधाम से भरा इच्छापूर्ण दाणा बाबा का मेला

ब्यावर (निसं) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 58 पर गांव कालिंजर में मगरा क्षेत्र के आराध्य देव श्री इच्छापूर्ण दाणा बाबा का मेला धूमधाम से भरा। मंदिर में दिनभर दर्शन करने को लेकर भक्तों का तांता लगा रहा। मेला की पूर्व संध्या पर रात्रि जागरण में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रितुल म्यूजिकल ग्रुप ब्यावर के बैनर तले प्रदेशभर से आए एक से बढ़कर एक ख्यातिप्राप्त कलाकारों की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को भौंर होने तक रोके रखा।

प्रसिद्ध भजन गायक धूलसिंह कडीवाल ने गणेश वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। धूलसिंह ने लाज राख ज्यों इच्छापूर्ण दाणा बाबा..., ऊंचा मगरा पे बैठोड़ी कालिंजर धराणी..., घूमा दे रहे बजरंग बालाजी..., कालिंजर सूं आवे बाबा कोटडा दरबार... आदि भजनों पर भक्त थिरकते नजर आएं। चित्तौड़गढ़ से आई नृत्यांगना सोनू ने मांथे पर 101 कलश लेकर आकर्षक भवई नृत्य प्रस्तुत किया तो हनुमान, दुर्गा शक्ति, शिव तांडव की झांकियों ने दर्शकों का मन मोह लिया।

"रावता ने क्यूं ललकारे रे, थारा कने कांई है सामान..." इस गाने पर नृत्यांगना हंसा रंगीली और राखी रंगीली की आकर्षक नृत्य प्रस्तुति पर दर्शक दीर्घा में युवा नाचते-झूमते नजर आएं। हंसा और राखी की जोडी ने लोकगीतों पर जमकर ठुमके लगाए। हास्य कलाकार रमेश कुमावत ने दर्शकों को खूब हंसाया।"

युवाओं को जोश में होश संभालने की नसीहत"– एसपी रतनसिंहमेला संयोजक हरजीसिंह चौहान ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ब्यावर जिला पुलिस अधीक्षक रतनसिंह थे। एसपी रतनसिंह ने आयोजन को सराहनीय बताते हुए युवाओं को जोश में होश संभालने की नसीहत भी दी। विशिष्ट अतिथि जवाजा पंचायत समिति प्रधान गणपतसिंह रावत, जवाजा सरपंच संघ अध्यक्ष महिपालसिंह बामनहेडा, थानाधिकारी महादेव गुर्जर, भामाशाह पुखराज लखारा आदि ने संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय सरपंच व प्रशासक ब्रजपालसिंह रावत ने की। इस मौके पर पूर्व सरपंच रमेश लाल, ओमप्रकाशसिंह राजश्री, युवराजसिंह पंवार, महेन्द्रसिंह गौड़, रूपसिंह गहलोत, बुधासिंह, श्रवणसिंह, हरिसिंह, जसवंतसिंह, सोनू गौड़, योगेन्द्रसिंह, राजेन्द्रसिंह, पुखराजसिंह, नरेन्द्रसिंह समेत मेला कमेटी कार्यकर्ता और जवाजा पुलिस थाना का जाब्ता के साथ-साथ बड़ी संख्या ब्यावर पुलिस लाइन से आरएसी के जवान और होमगार्ड भी तैनात रहे। मंच संचालन सरपंच ब्रजपालसिंह रावत व तरूण पंडित ने किया। कबड्डी में अंधेरी देवरी विजेता और उपविजेता रही बड़ासमेला में दूधिया रोशनी में डे-नाइट कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। मेला संयोजक हरजीसिंह चौहान ने बताया कि मेला में आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता के रोमांचक फाइनल मुकाबले में अंधेरी देवरी ने बडास को हराकर चैंपियनशिप जीती। इसमें विजेता टीम अंधेरी देवरी को ग्यारह हजार रुपए नकद राशि पुरस्कार स्वरूप देकर पुरस्कृत किया। इसी प्रकार उपविजेता रही बडास टीम को सात हजार सौ रुपए नकद राशि पुरस्कार स्वरूप देकर पुरस्कृत किया गया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 20 सितम्बर, 2025

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, चतुरशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, मघा नक्षत्र प्रातः 8:06 तक, साध्य योग रात्रि 8:07 तक, विष्टि करण दिन 11:57 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा दिन 11:57 तक रहेगी। आज चतुरदशी का श्राद्ध और विष शास्त्रादि से मृतकों का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:49 से 9:19 तक, चर 12:20 से 1:51 तक, लाभ-अमृत 1:51 से 4:52 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:18, सूर्यास्त 6:13

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और अनावश्यक धन खर्च होगा।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

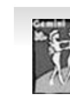

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में आज शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज धार्मिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आज स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

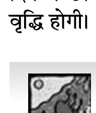

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

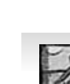

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

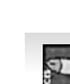

मीन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।